Roger Fry (रोजर फ्राय 1886-1934) (IV UNIT)

ये इंग्लैन्ड के प्रसिद्ध कला समीक्षक थे, इन्होंने चित्रकला को ध्यान में रखकर सौन्दर्य-शास्त्र पर अपने विचार प्रकट किये। ये उस समय के एक नए विचारवादियो (ब्लूम्सबरी) के समूह के सदस्य थे। रोजर फ्रॉय और क्लाईवबैल दोनों अपने समसामयिक दार्शनिक मूर (G.E.Moore) के विचारों से प्रभावित थे। दोनों कला के विषय में लिखते और एक ही निष्कर्ष पर पहुँचते थे।

रोजर फ्रॉय की दो महत्वपूर्ण पुस्तक है, 'ट्रॉन्सफोर्मेशन्स' (1926) और 'विजिन एन्ड डिजाईन" (1920) इनमें फ्रॉय ने दृश्य कलाओं की विशद विवेचना की। इनके अनुसार कला मनुष्य के काल्पनिक जीवन की अभिव्यक्ति है। ये कला में नैतिक दायित्व को आवश्यक नहीं मानते थे। मनुष्य में पिछले अनुभवों को कल्पना में स्मरण करने की शक्ति है इस प्रकार मनुष्य का दुहरा जीवन है: एक वास्तविक और दुसरा काल्पनिक। वास्तविक जीवन में वस्तुओं के प्रति हमारी प्रतिक्रिया आवश्यक है पर काल्पनिक जीवन में नहीं। इसमें हमारा सारा ध्यान अनुभव के वस्तुबोधात्मक और भावात्मक पक्षों पर ही केन्द्रित रहता है। इस प्रकार काल्पनिक जीवन में एक भिन्न प्रकार के मूल्यों तथा वस्तुबोध की स्थिति आ जाती है। कलाओं के काल्पनिक जगत् में हम घटनाओं को अलग प्रकार देखते है। इनमें हमारी लिप्तता नहीं होती अत: इन्हे अधिक अच्छी तरह समझते है। हमारे मन में वास्तविक जीवन की तुलना में कुछ दुर्बल भाव उठते है: पर कोई प्रतिक्रिया यथार्थ जीवन के समान नहीं होती।

Scanned with CamScanner

इनका विचार था कि कला हमारे जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं से मुक्त होता है। कला मे संवेगों की अनुभूति होती है। कलाकार कला मे जो संवेग व्यक्त करता है वे कल्पना पर आधारित होते है तथा यथार्थ जीवन के संवेगों से दुर्बल होते है। उन संवेगो को हम अनुभूत कर सकते है तथा देख भी सकते है। इन कला जनित संवेगो को हम से दर्शक के मन मे किसी प्रकार के प्रति क्रियात्मक भाव उत्पन्न नहीं होते वरन् वह कलाकृति तथा दर्शक एक हो जाते है। दर्शक तीव्र मनन अवस्था मे रहता है। यही अवस्था उसे यथार्थ जीवन के राग-द्वेष से मुक्त रखकर आनन्द देती है। यह आनन्द तथा सौन्दर्य ऐन्द्रियता से मुक्त तथा विलक्षण होता है। इस प्रकार रोजर फ्राय ने कलात्मक संवेगो को जीवन के संवेगों से भिन्न माना है। दर्शक की अनुभूत संवेदनाओ को कलाकार ही जागृत करता है तथा दर्शक जब कलाकृति का परिशीलन करता है तो उसके संवेग उद्वेलित हो जाते है तथा वह कलाकार से विशिष्ट सम्बन्ध स्थापित कर लेता है।

किसी दृश्य को वास्तव मे देखने की बजाय दर्पण में देखने पर ही हम वास्तव से 'दृष्टा' बनते है। दृश्य से हमारा सम्बन्ध पूर्णतः कट जाता है। सड़क पर चलते हुए हम अनेक वस्तुओं का अनदेखा कर सकते है पर उसी के दर्पण मे बने प्रतिबिम्ब मे हमे सभी वस्तुएँ रुचिकर प्रतीत हो सकती है। दर्पण की चौखटा दृश्य को सीमित कर चित्र की भाँति सीमित धरातल का रूप ले लेता है।

Scanned with CamScanner

प्रथम अनिवार्यता बाहरी परिस्थितियों से स्वतन्त्र होना है। इस स्थिति मे कला ही काल्पनिक जीवन को प्रेरित तथा नियन्त्रित करने का प्रमुख साधन है। काल्पनिक जीवन के लिए आधिक स्पष्ट वस्तु-बोध तथा भावों की गुहता स्वं (प्रतिक्रियाओं से) स्वतंत्रता की स्थिति कला के द्वारा ही उत्पन्न की जा सकती है।

फ्रॉय के अनुसार - " शुद्ध सौन्दर्य शास्त्रीय भात, आकार सम्बन्धी भाव है।"
वे आगे कहते है, " जिस किसी को भी चित्रकला का थोड़ा सा भी ज्ञान है वह जानता है कि चित्रकला मे 'क्या दिखाया गया' इसका महत्व नही है, 'कैसे दिखाया गया' इसका महत्व है।

रोजर फ्रॉय के विचारों का सारांश

1. कलाकृतियों की अपनी एक निहित महत्ता और मूल्य है। कला न जीवन है न उसकी नकल।
2. कला-विज्ञान सभी शुद्ध रूप से सत्य की खोज करते है - जैसे गणित।
3. इस प्रकार कला यदि शुद्ध है, तो उसमें एक अनिवार्य कलात्मक भाव रहेगा 'अशुद्ध' कला मे अन्य तत्व सरक आँएगे। उदाहरण के लिए विज्ञापन, कला के रूप मे निम्नतम, पर व्यवसाय के रूप मे उच्च हो सकते है।
4. कला सुख दे सकती है परन्तु ये आनन्द नहीं भी हो सकता, इन्द्रिय भी हो सकता है।
5. कलात्मक भाव, आकार के बारे मे भाव है, आकार से सम्बन्धो, उनके अभिकल्प की जो छाप हमारे मन पर पड़ी है, वह कलात्मक भाव है।

Scanned with CamScanner

6. कलाकृति के आकार मे अपना एक अर्थ होता है। आकार का मनन, स्वयं अपने मे, कुछ लोगों मे विशेष प्रकार का भाव जगा देता है, जो किसी भी दूसरी वस्तु से जुड़ा नहीं होता।

7. रोजर फ्राय के लिए "कैसे" रचा गया, अधिक महत्वपूर्ण है, "क्या" रचा गया से।

Scanned with CamScanner